प्राचीन भारतीय इतिहास के धार्मिक स्रोत

भारतीय इतिहास का एक बड़ा हिस्सा धार्मिक ग्रंथों और उनसे जुड़ी परंपराओं से जाना जाता है। ये न केवल धर्म और दर्शन का ज्ञान कराते हैं, बल्कि समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति की झलक भी प्रदान करते हैं।

---

1. वैदिक साहित्य

ऋग्वेद – भारत का सबसे प्राचीन ग्रंथ, जिसमें स्तोत्रों के माध्यम से उस समय के समाज, प्रकृति-पूजा और राजनीतिक संगठनों की जानकारी मिलती है।

साम, यजुर्वेद और अथर्ववेद – इनमें यज्ञ-पद्धति, मंत्र, चिकित्सा, लोक-विश्वास और धर्म की विकसित धारणाएँ मिलती हैं।

ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद – धार्मिक अनुष्ठानों, दर्शन और आत्मा-परमात्मा संबंधी विचारों का विवरण देते हैं।

---

2. बौद्ध साहित्य

त्रिपिटक (विनय, सुत्त, अभिधम्म) – बुद्ध के उपदेश, भिक्षु जीवन और बौद्ध धर्म की दार्शनिक धारणाएँ बताते हैं।

जातक कथाएँ – बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाओं के माध्यम से समाज की नैतिकता, व्यवसाय, परिवहन और लोकजीवन की झलक मिलती है।

बौद्ध ग्रंथों का प्राकृत व पाली भाषा में लेखन हमें उस समय की भाषा और साहित्यिक परंपरा का ज्ञान कराता है।

---

3. जैन साहित्य

आगम – महावीर और उनके उपदेशों पर आधारित, जैन धर्म के मूल ग्रंथ।

प्राकृत भाषा के ग्रंथ – जैन समाज की आचार-संहिता, व्यापारिक गतिविधियों और नगर जीवन का अच्छा विवरण देते हैं।

जैन आचार्यों की रचनाएँ – गणित, ज्योतिष और दर्शन पर भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

---

4. महाकाव्य और पुराण

रामायण और महाभारत – ये केवल धार्मिक महाकाव्य ही नहीं, बल्कि प्राचीन राजनीति, समाज, युद्ध और संस्कृति के जीवंत दस्तावेज़ भी हैं।

पुराण (18 महापुराण और अनेक उपपुराण) – सृष्टि-उत्पत्ति, वंशावली, राजाओं के इतिहास और तीर्थस्थलों का विवरण प्रदान करते हैं।

---

5. अन्य धार्मिक परंपराएँ

संगम साहित्य में धार्मिक उल्लेख – द्रविड़ समाज की आस्था और देवी-देवताओं की जानकारी।

तांत्रिक व भक्तिकालीन ग्रंथ – धार्मिक साधना और सामाजिक परिवर्तन की झलक देते हैं।

निष्कर्ष

प्राचीन भारत के धार्मिक स्रोत केवल आस्था और पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं हैं। वे उस युग के सामाजिक ढाँचे, आर्थिक गतिविधियों, राजनीतिक व्यवस्था और सांस्कृतिक आदर्शों को समझने के लिए भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। इसीलिए इतिहासकार इन ग्रंथों को साहित्यिक ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में भी देखते हैं।